BHASIKA

भ

बिस्मिल अज़ीमाबादी

सरफरोशी की तमन्ना

सरफ़रोशी की तमन्ना

बिस्मिल अज़ीमाबादी

Published: 1921

Categories: Poem

Source: Wikisource.com

About:

Sarfaroshi ki Tamanna is a patriotic poem written in Urdu by Bismil Azimabadi of Patna in 1921, and then immortalized by the great revolutionary of Indian freedom Pt. Ramprasad Bismil as a freedom war cry during the British Raj period in India. It was first published in journal "Saba", published from Delhi. The poem was written as an ode to young freedom fighters of the Indian independence movement. It has also been associated with the younger generation of inter-war freedom fighters such as Ashfaqullah Khan, Shaheed Bhagat Singh and Chandrashekhar Azad. (Source: Wikipedia)

Copyright: This ebook may be freely used in India because its copyrights have expired. It may not be free of copyright in other countries. Readers outside of India must check the copyright laws of their countries before downloading or redistributing our ebooks.

Note: This book is brought to you by Bhasika

http://www.bhasika.com

Strictly for personal use, do not use this file for commercial purposes.

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में है

ऐ वतन, करता नहीं क्यूँ दूसरी कुछ बातचीत,

देखता हूँ मैं जिसे वो चुप तेरी महफ़िल में है

ऐ शहीद-ए-मुल्क-ओ-मिल्लत, मैं तेरे ऊपर निसार,

अब तेरी हिम्मत का चरचा ग़ैर की महफ़िल में है

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

वक़्त आने पर बता देंगे तुझे, ए आसमान,

हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है

खेँच कर लाई है सब को क़त्ल होने की उमीद,

आशिकों का आज जमघट कूचा-ए-क़ातिल में है

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

है लिए हथियार दुश्मन ताक में बैठा उधर,

और हम तैयार हैं सीना लिए अपना इधर.

ख़ून से खेलेंगे होली अगर वतन मुश्क़िल में है

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

हाथ, जिन में है जूनून, कटते नही तलवार से,

सर जो उठ जाते हैं वो झुकते नहीं ललकार से.

और भड़केगा जो शोला सा हमारे दिल में है,

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

हम तो घर से ही थे निकले बाँधकर सर पर कफ़न,

जाँ हथेली पर लिए लो बढ चले हैं ये कदम.

ज़िंदगी तो अपनी मॆहमाँ मौत की महफ़िल में है

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

यूँ खड़ा मक़्तल में क़ातिल कह रहा है बार-बार,

क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है?

दिल में तूफ़ानों की टोली और नसों में इन्कलाब,

होश दुश्मन के उड़ा देंगे हमें रोको न आज.

दूर रह पाए जो हमसे दम कहाँ मंज़िल में है,

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

वो जिस्म भी क्या जिस्म है जिसमे न हो ख़ून-ए-जुनून

क्या लड़े तूफ़ान से जो कश्ती-ए-साहिल में है

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में

THE END

भासिका | BHASIKA

www.bhasika.com